भेड़-बकरियों में पी. पी. आर. रोग

यह रोग "स्यूडो रिण्डरपेस्ट" व "काटा" के नाम से भी जाना जाता है

कारण

यह रोग वायरस के कारण होता है

रोग का फैलाव

रोगी पशु के सम्पर्क में आने, उसके मल, मूत्र एवं आँख, नाक व मुँह से होने वाले स्राव तथा दूषित चारे व पानी से यह रोग फैलता है

लक्षण

- शुरूआती अवस्था में नाक से पानी जैसा स्राव जो बाद की अवस्था में गाढ़ा व मवाद युक्त होकर नाक को बन्द कर देता है, जिससे पशु मुँह खोल कर श्वांस लेने लगता है
- पशु को तेज बुखार हो जाता है
- खाँसी व निमोनिया के लक्षण होना
- मसूड़े व जीभ पर छाले एवं होठों पर सूजन आ जाना
- पशु को दस्त होना
- आँखों में सूजन व झिल्ली का गहरा लाल हो जाना

आँख से पानी आना

मसूड़े पर छाले

नाक से मवाद युक्त स्राव

आँख की लाल झिल्ली

बचाव व उपचार

तीन माह से अधिक की आयु वाले भेड़-बकरियों में प्रतिवर्ष टीकाकरण करायें

- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें
- पशु आवास सूखा एवं स्वच्छ रखें

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031